घाघ और उनकी कहावतें

डॉ० अशोक त्रिपाठी

साहित्यवाणी
२८-पुराना अल्लापुर इलाहाबाद-२११००६

संस्करण □ प्रथम १९८८ ई०

द्वितीय १९९० ई०

मूल्य □ सजिल्द : पन्द्रह रुपये मात्र

अजिल्द : दस रुपये मात्र

चित्रांकन □ भवानी शंकर 'सेनगुप्त'

प्रकाशक □ साहित्यवाणी
२८, पुराना अल्लापुर,
इलाहाबाद—२११००६

मुद्रक □ स्टैण्डर्ड प्रेस
२, बाई का बाग,
इलाहाबाद—२११००३

मौसीजी श्रीमती सुशीला देवी

की पुण्य स्मृति में

आदरणीय मौसाजी श्री रामकृपाल पाण्डेय

को सादर समर्पित

निवेदन

मैं जब प्राइमरी में पढ़ता था तब घाघ की कहावतों को मैंने पढ़ा था। उनमें से कई तो अभी तक याद हैं। गांव में तो मैं बात-बात पर घाघ की कहावतें सुना करता था। गांव के लोग खेती-बारी का सारा काम उन्हीं कहावतों में छिपे हुये अनुभव के आधार पर ही निश्चित करते हैं। कब बुआई होनी चाहिये, कितना बीज पड़ना चाहिये, कब बाढ़ आयेगी, कब सूखा पड़ेगा, कब अच्छी वर्षा होगी, कौन-सा बैल अच्छा है। कौन-सा खराब, गाय-भैंसें कब बच्चा देंगी तो शुभ होगा, कब अशुभ, लोकव्यवहार में किन-किन बातों में हमें सावधानी बरतनी चाहिये आदि-आदि तमाम बातों का निर्णय कहावतों के निष्कर्ष पर ही निर्भर रहता है और लगभग शत-प्रतिशत सटीक भी उतरता है।

इनके सटीक उतरने का कारण भी है। ये कहावतें यूँ ही नहीं गढ़ ली गयीं। इन कहावतों के पीछे सैकड़ों वर्षों का अनुभव छिपा हुआ है। एक ही प्रकार के समय में एक ही प्रकार की परिस्थिति में एक ही प्रकार की घटना, बार-बार घटित देखकर उसके आधार पर अनुभवी लोगों ने एक निष्कर्ष निकाला और फिर उस निष्कर्ष को कम से कम शब्दों में छन्द का रूप दे दिया, क्योंकि छन्द आसानी से याद रहते हैं और एक के कंठ से दूसरे के कंठ में उतरते चले जाते हैं। एक तरफ से कहावतें अनुभवों का महत्तम समापवर्त्य हैं।

चूंकि ये कहावतें सैकड़ों वर्षों तक केवल मौखिक रूप में ही रहीं इसलिए अलग-अलग प्रदेशों में इनमें भाषा और

शब्दों का अलग-अलग रूप मिलता है लेकिन निष्कर्ष लगभग एक जैसे हैं। बात एक ही कही गई है।

आज विज्ञान का युग है, हम नया प्राप्त करने की दौड़ में और पुराने को छोड़ने की जिद में तमाम ऐसे बहुमूल्य अनुभवों से अलग होते जा रहे हैं जो हमारे लिए उपयोगी है। पुराना छोड़ना चाहिए लेकिन वही जो हमारे लिए उपयोगी न हो। अगर पुराना भी उपयोगी है तो उसे भी हमें अपनाने में हिचकना नहीं चाहिए।

कहावतें भी हमारी ऐसी ही पुरानी धरोहर हैं जो पुरानी होने के बावजूद भी उपयोगी हैं। उन्हें हमें जानना चाहिए। ये कहावतें अंधविश्वास और रूढ़ियों की देन नहीं हैं और न ही ये अंधविश्वास का समर्थन करती हैं। ये तो अनुभव सिद्ध है, ये तो आँखों से देखे हुए सत्य को, भोगे हुए सत्य को बताती है।

आज के बच्चों, साक्षरों और नव साक्षरों को उन्हें जानना और समझना चाहिये ताकि वे अपने अनुभव को व्यापक बना सकें उसे समृद्ध कर सकें, दीन-दुनिया को इन कहावतों की आँखों से देख सकें, उसे समझ सकें।

यह पुस्तक अपने उस उद्देश्य में कितनी सफल है, उसका निर्णय मैं इस आशा से इसके पाठकों पर छोड़ता हूँ कि निश्चय ही यह पुस्तक उसके ज्ञान-भण्डार को समृद्ध करेगी।

२२, लाउदर रोड,
इलाहाबाद, २११००२ — डॉ॰ अशोक त्रिपाठी
११ जुलाई १९८९

घाघ

घाघ की जीवनी के बारे में तरह-तरह की बातें मिलती हैं, जितने लोग हैं, उतनी तरह की कहानियाँ प्रचलित हैं। कोई इन्हें बिहार का मानता है, कोई उत्तर प्रदेश का। लेकिन निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सका कि घाघ कहाँ के रहने वाले थे।

अभी तक घाघ के बारे में सबसे प्रमाणिक बात यही मिलती है कि घाघ कन्नौज (जिला फरूर्खाबाद, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। कन्नौज के सराय चौधरी नामक मुहल्ले में रहते थे। आज भी इनकी पीढ़ी के लोग वहाँ रहते हैं। उसका नाम सराय घाघ आज भी सरकारी कागजों में मिलता है।

घाघ देवकली के दूबे थे। कहा जाता है कि घाघ यहाँ पैदा नहीं हुए थे। उनका जन्म कहीं और हुआ था। सराय घाघ में तो वे बाद में आये थे। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि घाघ छपरा के रहने वाले थे। वहाँ घाघ की तरह ही इनकी पतोहू भी विद्वान थी। वह भी घाघ की तरह कहावतें बनाती थी। घाघ और उनकी इस पतोहू में कभी नहीं पटती थी। घाघ जो-जो कहावतें बनाते, उनकी पतोहू उसके विरोध में तुरन्त कहावत बना देती। इससे घाघ परेशान हो गये और छपरा छोड़कर कन्नौज चले आये। कन्नौज में घाघ की ससुराल थी।

घाघ और उनकी पतोहू की विरोधी कहावतों की एक बानगी देखने लायक है—

घाघ की कहावत

पौला पहिरे हर जोतैं औ
सुथना पहिरि निराव।
घाघ कहैं ये तीनों भकुआ
बोझ लिहे जो गावैं॥

इसके विरोध में उनकी पतोहू कहावत---

अहिर होइ तो कस ना जोतैं,
तुरिकन होइ निरावैं।
छैला होय तो कस ना गावैं,
हलुक बोझ जो पावैं॥

अर्थ-घाघ की कहावत का--पौला (लकड़ी का खड़ाऊँ जिसमें खूँटी की जगह रस्सी लगी होती है, जैसे कि आज कल हवाई चप्पल में होती है, और जो दो-ढाई इंच ऊँचा होता है) पहन कर हल जोतने वाला, पैजामा पहन कर खेत निराने "खेत की घास निकालना" वाला तथा सिर पर बोझ लाद कर गाने वाला, ये तीनों मूर्ख होते हैं।

अर्थ पतोहू के कहावत का--अहीर (ग्वाला) होगा तो पौला पहन कर जरूर खेत जोतेगा, मुसलमानिन होगी तो पैजामा पहन कर ही खेत निरायेगी, और रसिक नौजवान होगा तथा उसके सिर पर हलका बोझ होगा तो क्यों नहीं आयेगा अर्थात जरूर गायेगा, इसमें मूर्खता की कोई बात नहीं है।

घाघ बहुत विद्वान थे और हर समस्या का हल तुरंत ही कहावत में प्रस्तुत कर देते थे। इनकी ख्याति देखकर उस समय का बादशाह हुमायूँ भी इनको मानता था। उसके मरने के बाद यह अकबर के दरबार में रहने लगे। अकबर भी इनसे बहुत खुश रहता था। उसी ने इन्हें अपने

नाम से गांव बसाने की बात कही तो इन्होंने 'अकबराबाद सराय घाघ' नाम से कन्नोज में एक गांव बसाया। आज यह गांव जो अब चौधरी सराय कहलाता है, कन्नोज रेलवे स्टेशन से ३ फर्लाङ्ग पश्चिम है।

अकबर ने ही इन्हें चौधरी की उपाधि दी और कई गांव इनाम में दिये।

घाघ बहुत स्वाभिमानी और धर्म कर्म के पक्के थे इसी कट्टरता के कारण ही अकबर एक बार उनसे नाराज हो गया तो इनके कुछ गांव छीन लिए थे।

घाघ को ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान था। लोक व्यवहार और खेती बारी का ज्ञान तो अद्भुत था। आज भी घाघ की कहावतें ग्रामीण लोगों में वेद के मंत्रों के समान आदर पाती हैं और पग-पग पर उनकी मदद करती है।

घाघ को पहले से पता था कि उनकी मृत्यु तालाब में डूबने से होगी इसीलिए वे कभी तालाब में या नदी में स्नान नहीं करते थे। लेकिन एक दिन जब इनके कुछ मित्र तालाब में नहा रहे थे, तो इन्हें भी हठ करके पानी खींच लाये। उसी समय पानी में डूब कर इनकी मृत्यु हो गयी। मरते समय इन्होंने कहा था—

ई नहि जान घाघ निर्बुद्धि,
आवैं काल बिनासैं बुद्धि।

(यह मत समझो कि घाघ मूर्ख था घाघ मूर्ख नहीं था क्योंकि जब काल आता है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।)



लोक-व्यवहार सम्बन्धी कहावतें









खेती पाती बीनती
औ घोड़े की तंग—
अपने हाथ संवारिये
लाख लोग हों संग

किसानी करना, पत्र लिखना, विनती करना (किसी से सहायता की प्रार्थना करना) तथा घोड़े की तंग (जीन का चमड़े का चौड़ा फीता) कसने का काम अपने ही हाथ करना चाहिए, इसे दूसरों से नहीं कराना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है, भले ही साथ में लाखों लोग क्यों न हों ।






गया पेड़ जब बकुला बैठा
गया गेह जब मुड़िया पैठा
गया राज जहँ राजा लोभी
गया खेत जहँ जामी गोभी

जिस पेड़ पर बगुला बैठता है, वह पेड़ बेकार हो जाता है, जिस घर में सन्यासी का प्रभाव हो जाता है, वह घर बेकार हो जाता है, जहाँ का राजा लालची होता है वह राज्य नष्ट हो जाता है और जिस खेत में गोभी नाम की घास उग आती, वह खेत बेकार हो जाता है, उसमें अनाज नहीं पैदा होता ।

अगसर खेती अगसर मार
कहैं घाघ ते कबहुँ न हार

पहले खेती करने और पहले वार करने वाला कभी नहीं हारता, उसको विजय ही होती है ।





नारि करकसा कहर घोर।
हाकिम होइके खाइ अंकोर॥
कपटी मित्र पुत्र है चोर।
घाघा उनको गहिरे बोर॥

कर्कशा (झगड़ालू) स्त्री, काटने वाला घोड़ा, घूस लेने लाला न्यायाधीश या अधिकारी कपटी (धोखा देने वाला) मित्र, चोरी करने वाला पुत्र—इन सबको गहरे पानी में डुबो देना चाहिए। क्योंकि ये सब समाज के लिए कलंक हैं।



बूढ़ा बैल बेसा है
झीना कपड़ा लेय।
आपुन करै नसैनी
देवै दूषन देय॥

जो आदमी बूढ़ा बैल खरीदता है। कमजोर पतला कपड़ा खरीदता है वह अपनी हानि अपने आप करता है, इसमें भाग्य या ईश्वर का कोई दोष नहीं है। ईश्वर या भाग्य को वह व्यर्थ ही दोष देता है।

चैते गुड़ बैसाखे तेल।
जेठ क पंथ असाढ़ क बेल॥
सावन साग, न भादों दही।
क्वार करैला कातिक मही॥
अगहन जीरा पूसे धना।
माघे मिश्री फागुन चना॥

चैत के महीने में गुड़ और बैसाख में सरसों का तेल खाना, जेठ में रास्ता चलना तथा असाढ़ में बेल, सावन में साग, भादों में दही, क्वार में करैला, कार्तिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री तथा फागुन चना नहीं सेवन करना चाहिए। ये वस्तुएँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।



फूटे से बहि जातु हैं
ढोल, गँवार, अँगार ।
फूटे से बनि जातु हैं
फूट, कपास, अनार ॥

ढोल, गँवार और अंगारा (आग) फूटने से व्यर्थ हो जाते हैं, लेकिन फूट, (एक प्रकार की ककड़ी, जिसमें पकने पर दरारें पड़ जाती हैं) कपास और अनार फूटने से ही सार्थक होते हैं, उनकी कीमत बढ़ जाती है ।

ओछो मंत्री राजै नासै
ताल बिनासै काई ।
सान साहिबी फूट बिनासै
घग्घा पैर बिवाई ॥

नीच स्वभाव का मंत्री राजा का, काई तालाब का, आपसी फूट (वैर-भाव) मान-मर्यादा का तथा बिवाई (पैर का फटना) पैर का नाश कर देती है ।

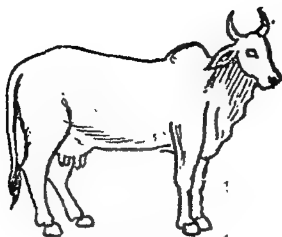


ओछे बैठक, ओछे काम
ओछी बातें आठो जाम
घाघ बताये तीनि निकाम
भूलि न लीजै इनको नाम ॥

जो ओछे (नीच) आदमियों के साथ बैठता है, गन्दा काम करता है और रात-दिन गन्दी बातें करता है, घाघ कहते है ये तीनों प्रकार के लोग निकम्मे होते हैं। उनका कभी भूल कर भी नाम नहीं लेना चाहिए, इनसे हमेशा हानि ही होगी।

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा।
खेती उपजै अपने कर्मा॥

पुत्र की उन्नति पिता द्वारा किए गए धर्म से होती है और खेती की उन्नति आदमी के स्वयं के परिश्रम से होती है।



नित्ते खेती दूसरे गाय–
नाहीं देखै लेकर जाय ॥
घर बैठल जो बनवै बात
देह में वस्त्र न पेट में भात ॥

जो आदमी प्रतिदिन खेती को तथा दूसरे दिन गाय की देख-रेख नहीं करता, उसकी ये चीजें उचित देख-भाल के अभाव में नष्ट हो जाती है। जो आदमी घर में बैठा-बैठा केवल बात बनाया करता है, लम्बी-चौड़ी डींगें मारता है, काम नहीं करता, उसके शरीर पर न तो कपड़ा रहेगा और न ही पेट में अन्न रहेगा। वह हमेशा निर्धन रहेगा।

उत्तम खेती मध्यम बान
निसद चाकरी भीख निदान

संसार में सबसे अच्छा काम खेती है, व्यापार मध्यम-दर्जे का काम है, चाकरी निकृष्ट कोटि का काम है, भीख मांगना तो सबसे बुरा है।

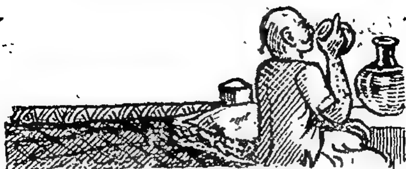


जो हल जोतै खेती वाकी ।
और नहीं तो जाकी ताकी ॥

खेती उसी की है अर्थात उसी को लाभ मिलेगा जो अपनी खेती स्वयं अपने हाथ से करेगा, नहीं तो उसका लाभ किसी और को मिलेगा ।

उत्तम खेती जो हर गहा –
मध्यम खेती जो संग रहा –
जो पूछे सि हरवाहा कहाँ
बीज बूड़िगें तिनके तहाँ ।

जो व्यक्ति स्वयं हल चलाता है उसकी खेती सबसे अच्छी होगी, जो व्यक्ति हलवाहे के साथ-साथ स्वयं भी लगा रहता है उसकी खेती मध्यम दर्जे की होगी तथा जो व्यक्ति यह पूछता है कि हलवाहा कहाँ है अर्थात् केवल हलवाहे के भरोसे ही रहता है उसकी खेती में बीज के बराबर भी पैदावार नहीं होगी । उसकी खेती नष्ट हो जायगी ।



प्रातकाल खटिया ते उठि कै
पिअइ तुरंतै पानी ।
कबहूँ घर में वैद न अइहैं
बात घाघ कै जानी ॥

घाघ का कहना है कि जो आदमी सबेरे चारपाई से उठते ही पानी पीता है वहां हमेशा स्वस्थ रहेगा उसके घर में कभी वैद्य के आने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी ।

रहै निरोगी जो कम खाय ।
बिगरे काम न जो गम खाय ॥

जो व्यक्ति भूख से कुछ कम खाता है, वह निरोग रहता है, उसे रोग नहीं पकड़ता तथा जो व्यक्ति गम खाता है, गुस्से का बरदाश्त कर लेता है, उसका काम नहीं बिगड़ता है ।

मारि के टरि रहु
खाइ कै परि रहु

मार करके व्यक्ति को तुरन्त भाग जाना चाहिए तथा खाना खाने के तुरन्त बाद आराम करना चाहिए ।

खाइ के मूतै सूतै बाउँ ।
काहे क बैद बसावै गाउँ ॥

अगर आदमी भोजन के तुरन्त बाद पेशाब करके बायीं करवट सो जाय, तो उसे अपने गांव वैद्य बसाने की कोई जरूरत नहीं है अर्थात् ऐसा करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है ।

अँतरे खोतरे डंडै करै —
ताल नहाय, ओसमाँ परै ।
दैव न मारै अपुनइ मरै ॥

जो आदमी कभी-कभी (दूसरे-चौथे) कसरत करता है, नियमित नहीं करता, ताल में नहाता है, ओस में सोता है, उसे भगवान या भाग्य नहीं मारता वह अपने आप अपनी मूर्खता से मरता है ।

जाको मारा चाहिए
बिन मारे बिन घाव ।
वाको यही बताइए
घुइयाँ पूरी खाव ॥

जिस व्यक्ति को बिना हथियार और बिना किसी चोट के मारना हो, तो उसे यह सलाह देनी चाहिए कि वह घुइयाँ (अरवी) के साथ पूड़ी खाए, क्योंकि घुइयाँ-पूड़ी साथ-साथ खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

खेती तो थोड़ी करे
मिहनत करे सिवाय ।
राम चहें वही मनुष को
टोटा कभी न आय ॥

जो व्यक्ति खेती कम करता है, लेकिन परिश्रम अधिक करता है, ईश्वर की कृपा से उसको कभी किसी बात की कमी नहीं रहती ।

काँटा बुरा करील का
औ बदरी का घाम ।
सौत बुरी है चून की
औ साझे का काम ॥

करील (एक प्रकार का झाड़दार पौधा जिसका कांटा विषैला होता है) का कांटा, बदरिही धूप (जब धूप और बदली साथ-साथ होती है) सौत (दूसरी पत्नी) चाहे वह आटे की हो क्यों न हो तथा साझे का काम, ये चारों कष्ट-कारक होते हैं, दुःख देते हैं ।

ना अति बरखा ना अति धूप ।
ना अति बक्ता ना अति चूप ॥

बहुत पानी बरसना (बाढ़ आना) बहुत तेज धूप होना, सूखा पड़ना, बहुत बोलना और एक दम चुप हो रहना—ये सभी बातें उचित नहीं है क्योंकि किसी भी चीज का अति होना हानिकारक है ।

माघ-पूस की बादरी
और कुवारा घाम —
यह दोनों जो कोउ सहै
करै पराया काम ॥

माघ तथा पूस महीने की बदली, (जब ठंड बहुत पड़ती है) तथा क्वार महीने की धूप, (इस महीने में धूप बहुत तेज लगती है। इन दोनों को जो सहने की शक्ति रखता हो वही परोपकार कर सकता है, क्योंकि परोपकार में बहुत कष्ट सहना पड़ता है।

कीड़ी संचै तीतर खाय।
पापी को धन पर ले जाय ॥

जिस तरह चींटी का जमा किया हुआ अन्न तीतर खा जाता है, उसी प्रकार पापी व्यक्ति का धन दूसरे लोग ही खाते हैं।

नाटा खोटा बेंचि के
चार धुरंधर लेहु।
आपन काम निकारि के
औरहू मँगनी देहू ॥

छोटे-छोटे कई बैलों को बेचकर चार बड़े और मजबूत बैल खरीदना चाहिए ताकि अपना काम करने के बाद किसी जरूरतमन्द को मँगनी भी दिया जा सके।



खेती सम्बन्धी कहावतें





तीन सिंचाई तेरह गोड़ ।
तब देखौ ऊखी के पोर ॥

ईख को यदि तीन बार सिंचाई और तेरह बार गुड़ाई कर दी जाय तब उसकी उपज देखते ही बनती है । ईख खूब बड़े-बड़े पोरों वाली खूब लम्बी होती है ।



चित्रा गोहूँ अद्रा धान ।
न उनके गेरुई न इनके घाम ॥

चित्रा नक्षत्र में गेहूँ और आर्द्रा नक्षत्र में धान बो दिया जाय तब न तो गेहूँ में गेरुई नामक रोग लगेगा और न ही धान को धूप खानी पड़ेगी । फसल अच्छी होगी ।

काले फूल न पाया पानी—
धान मरा अध बीच जवानी ।

धान का फूल जब काला पड़ जाय तब उसे पानी देना बहुत जरूरी होता है नहीं तो वह बीच जवानी में ही मर जायेगा ।



हस्त न बजरी चित्र न चना ।
स्वाती न गोहूँ विसारव न धना ॥

हस्त नक्षत्र में बाजरा, चित्र नक्षत्र में चना, स्वाति नक्षत्र में गेहूं तथा विसाखा नक्षत्र में धान नहीं बोना चाहिए, पैदावार अच्छी नहीं होती ।



धान पान अरु केरा
तीनो पानी के चेरा

धान, पान तथा केला को खूब पानी मिले तभी उपज अच्छी होगी ।

जौ गेहूँ बोवै पाँच पसेर ।
मटर के बीघा तीसै सेर ॥
बोवै चना पसेरी तीन ।
तिन सेर बीघा जोन्हरी कीन ॥
दो सेर अरहर मोथी मास ।
डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास ॥
पाँच पसेरी बिगहा धान ।
तीन पसेरी जड़हन मान ॥
सवा सेर बीघा साँवाँ मान ।
तिल्ली सरसों अंजुरी जान ॥
बर्रे कोदो सेर बोआओ ।
डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ ॥
डेढ़ सेर बजरा बजरी सावाँ ।
कोदो ककुन सवैया बोवा ॥
यहि विधि से जब बोवे किसान —
दूना लाभ की खेती जान ॥

एक बीघा जमीन में किस बीज की कितनी मात्रा पड़नी चाहिए इसको बताया गया है कि जो-गेहूँ पचीस सेर, मटर सतो सेर चना पन्द्रह सेर, मक्का तीन सेर, अरहर मोथी और उर्द दो सेर, कपास डेढ़ सेर, धान पचीस सेर, जड़हन पन्द्रह सेर, सांवां सवा सेर, तिल्ली और सरसों एक अंजुरी बर्रे, कोदों एक सेर, अलसी डेढ़ सेर बजरी डेढ़ सेर, मकुनी सवा सेर, बोना चाहिए । इस दर से जो किसान खेत में बीज बोएगा, उसे दुगुना लाभ होगा ।

बीघा बायर होय
बाँध जो होय बँधाये ।
भरा भुसौला होय
बबुर जो होय बुवाये ॥
बढ़ई बसे समीप
बसूला बाढ़ धराये ।
पुरखिन होय सुजान
बिया बोउनिहा बनाये ॥
बरद बगौधा होय
बरदिया चतुर सुहाये ।
बेटवा होय सपूत
कहे बिन करे कराये ॥

यदि किसी किसान के पास निम्नलिखित चीजें हों तो वह एक अच्छा और सुखी किसान हो सकता है—

उसका सब खेत एक जगह हो, सिंचाई के लिए बांध बना हो, चोर के लिए भुसौली [भूसे का घर] भरी हो, हल आदि उपकरणों के लिए बबूल के पेड़ हों बढ़ई घर के पास हो, जिसके बसूले की धार हमेशा तेज रहती हो, घर की मालकिन चतुर हो काम काज में होशियार हो और बुआई का बीज पहले से ही तैयार करके रखने वाली हो, बैल बगौधा नस्ल के हों, हलवाला चतुर और अच्छे स्वभाव वाला हो, पुत्र सपूत हो जो बिना कहे ही सारा काम-काज करने और कराने वाला हो ।



बाड़ी में बाड़ी करै,
करै ईख में ईख।
वे घर यों हीं जायँगे
सुनै पराई सीख ॥

जो किसान बाड़ी [कपास] के खेत में पुनः बाड़ी की खेती करता है, ईख के खेत में पुनः ईख बोता है और दूसरे के कहने के अनुसार ही काम करता है स्वयं नहीं सोचता, उसका घर अनायास ही नष्ट हो जाता है।



पछिवाँ हवा ओसावै जोई।
घाघ कहैं घुन कबहुँ न होई ॥

अनाज यदि पछुवाँ हवा में ओसाया जाय तो घाघ कहते हैं कि उस अनाज में घुन कभी नहीं लगता।



सन घना, बन बेगरा
मेढ़क फन्दे ज्वार ।
पैर पैर पर बाजरा
करै दरिद्दै पार ॥

सनई घनी, कपास को दूर-दूर, ज्वार की मेढ़क की छलांग जितनी दूरी पर तथा बाजरे को एक-एक कदम की दूरी पर बोया जाय तो फसल अच्छी होगी और गरीबी दूर हो जायेगी ।

गाजर गंजी मूरी—
तीनो बोवै दूरी ।

गाजर गंजी (शकरकंद) तथा मूली इन तीनों को दूर-दूर बोना चाहिए ।



हरिन फलांगन काकरी
पेगे पेग कपास।
जाय कहो किसान से
बोवै घनी उखास॥

हिरन के छलांग की जितनी दूरी होती है उतनी दूरी दूरी पर ककड़ी, एक-एक कदम की दूरी पर कपास बोनी चाहिए। घाघ कहते हैं कि किसान से जाकर यह भी कह दो कि ईख को घना बोना चाहिए। ऐसा करने से पैदावार अच्छी होगी।

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर।
वहि किसान को जान्यो दूबर॥

जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ती, वह किसान दुर्बल होता है निर्धन होता है, क्योंकि बिना खाद के अन्न अधिक नहीं पैदा हो सकता।



मौसम-विज्ञान सम्बन्धी कहावतें



ढेले ऊपर चील जो बोलै।
गली गली में पानी डोलै॥

ढेले के ऊपर बैठकर जब चील्ह बोलती है तो समझना चाहिये कि खूब पानी बरसेगा और हर गली पानी से भर जायगी।



दिन को बादर रात को तारे ।
चलो कंत जहँ जीवैं बारे ॥

एक पत्नी अपने पति से कहती है कंत दिन को बादल दिखाई पड़ते हैं, और रात को आसमान साफ हो जाता है, तारे दिखाई पड़ते हैं, इसलिए निश्चय ही सूखा पड़ेगा, अतः बच्चों को लेकर ऐसी जगह चल देना चाहिए जहाँ उन्हें जिन्दा रख सकें।

फागुन मास बहै पुरवाई ।
तब गेहूँ में गेरुई छाई ॥

यदि फागुन के महीने में पुरवा हवा चले तो समझना चाहिए कि गेहूँ में गेरुई नाम का रोग अवश्य ही लग जायेगा।



माघ पूस जो दखिना चलै—
तो सावन के लच्छन भलै ।

यदि माघ-पूस के महीने में दक्षिण की हवा चले तो समझना चाहिए कि सावन में अच्छी वर्षा होगी ।

दिन में गरमी रात में ओस—
कहे घाघ वर्षा सौ कोस ।

यदि दिन में गरमी पड़े और रात में ओस तो घाघ कहते हैं कि वर्षा बहुत दूर समझनी चाहिए । जल्दी पानी नहीं बरसेगा ।

जेठ मास जो तपै निरासा ।
तो जानो बरखा की आसा ॥

यदि जेठ के महीने में भीषण गरमी पड़े तो समझना चाहिए कि इस वर्ष वर्षा अच्छी होगी ।



उत्तर चमके बीजली
पूरब बहनो बाउ ।
घाघ कहैं भड्डर से
बरधा भीतर लाउ ॥

यदि उत्तर दिशा में बिजली चमके और पूरवा हवा चले तो घाघ भड्डर से कहते है कि बैलों को जल्दी घर के भीतर ले आओ क्योंकि पानी बरसने ही वाला है ।

पूरब धनु ही पच्छिम भान ।
घाघ कहै बरखा नियरान ॥

शाम को यदि पूरब दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे, तो घाघ का कहना है कि वर्षा जल्दी ही होगी ।

माघ में बादर लाल धरै —
तब जान्यो साँचो पथरा परै ।

माघ के महीने में जब लाल रंग के बादल दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि पत्थर जरूर पड़ेगा ।



बैलों की पहचान सम्बन्धी कहावतें



सींग मुड़े माथा उठा—
मुँह का होवे गोल—
रोम नरम चंचल करन—
तेज बैल अनमोल ॥

जिस बैल के सींग मुन्डे (छोटे), हों मस्तक उठा हो जिसका मुंह गोल हो, जिसके रोयें मुलायम हों। कान चंचल हों वह बैल चलने में तेज होगा, उसका मोल नहीं किया जा सकता। ऐसा बैल बहुत कीमती होता है।



पतली पेंडुली मोटी रान
पूँछ होय भुईं में तरियान ॥
जाके होवे ऐसी गोई ।
वाको तकें और सब कोई ॥

जिस बैल की पिंडली पतली हो, रान मोटी हो पूंछ जमीन को छू रही हो, जिस किसान के पास ऐसी बैलों की जोड़ी होगी, उसकी ओर सबकी नजरी अपने आप चली जायगी क्योंकि ये अच्छे बैलों के लक्षण हैं।

करिया काछी धौरा बान ।
इन्हें छाँड़ि जनि बेसहयो आन ॥

जिस बैल की पूंछ का निचला भाग काला हो और पूरा रंग सफेद हो, उसको छोड़ कर दूसरा बैल नहीं खरीदना चाहिए।



सात दाँत उदन्त को,
रंग जो काला होय।
इनको कबहुँ न लीजिए
दाम चहै जो होय ॥

उदन्त (दूध के दाँत वाला) बैल के यदि सात दाँत हो और उसका रंग काला हो तो ऐसे बैल को कभी नहीं खरीदना चाहिए, उनका दाम चाहे जो हो, वह एकदम सस्ता ही क्यों न हो।

घोंची देखै ओहिं पार—
थैली खोलै यहिं पार।

घोंघी बैल जिसकी सींग आगे की मुड़ी होती है, नदी के उस पार दिखाई पड़े तो उसको खरीदने के लिए इसी पार थैली खोल लेनी चाहिए अर्थात उसको तुरंत खरीद लेना चाहिए।



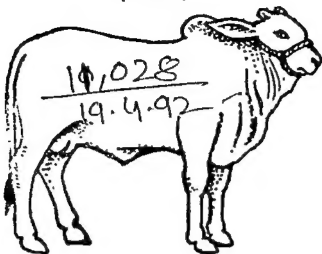
जहँवा देखिहा लोह बैलिया ।
तहवाँ दीहा खोलि थैलिया ॥

पत्नी अपने पति से कहती है कि 'बाजार में जहाँ तुम्हें लाल रंग का बैल मिले, तुरंत वहाँ थैली खोल देना अर्थात रुपया देकर बैल खरीद लेना, सोचने की जरूरत नहीं है।



नीला कंधा बैगन खुरा ।
कभी न निकले बैला बुरा ॥

एक पत्नी अपने पति से कहती है—जिस बैलों का कंधा नीले रंग का और की जिसका खुर बैंगनी रंग का होता है, वह बैल कभी भी बुरा नहीं निकलता ।



उजॅर बरौनी मुँह का महुआ ।
ताहि देखि हरवाहा रोवा ॥

जिस बैल की बरौनी सफेद होती है और मुंह पीला होता है उसको देखते ही हलवाहा रो पड़ता है, क्योंकि ऐसा बैल गद्दर (सुस्त) होता है ।



छोटा मुँह और ऐंठा कान —
यही बैल की है पहचान ।

छोटा मुंह होना तथा ऐंठा कान होना, अच्छे बैल की पहचान है ।